ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i3.2017.6351

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

हिंद-प्रशांत परिप्रेक्ष्य में भारतदृअमेरिका संबंध रू सहयोग, प्रतिस्पर्धा और शक्ति-संतुलन

डॉ. सी. अनुपा तिर्की[*1]
[*1] सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय गजानन अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा

सार संक्षेपः– भारतदृ-मेरिका संबंधों का द्विपक्षीय सहयोग से व्यापक वैश्विक सामरिक साझेदारी में रूपांतरण समकालीन वैश्विक राजनीतिक एवं सुरक्षा परिदृश्य में एक निर्णायक मोड़ है। यह परिवर्तन न केवल दोनों देशों के लिए, बल्कि समूची अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह प्रगति बदलते वैश्विक प्रतिमानों, साझा हितों और वैश्विक स्थिरता, समृद्धि एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के साझा दृष्टिकोण का प्रमाण है। शोध-पत्र की शुरुआत स्वतंत्रता-उपरांत भारतदृअमेरिका संबंधों के ऐतिहासिक अवलोकन से होती है। शीत युद्ध काल में इन संबंधों को गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक दूरी ने परिभाषित किया, जिसमें समय-समय पर सीमित संपर्क हुए। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद नए अवसरों ने दोनों देशों को संबंध पुनर्परिभाषित करने हेतु प्रेरित किया। सहस्राब्दी के आरंभ में हुआ नागरिक परमाणु समझौता इस बदलते समीकरण का आधार बना। इसके बाद रक्षा सहयोग, उच्च प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, और लोकतंत्र-प्रोत्साहन जैसे क्षेत्रों में साझेदारी का विस्तार हुआ। विश्लेषण में पाया गया कि चीन के उदय, हिंद-प्रशांत में बदलते शक्ति-संतुलन, और साझा आतंकवाद-निरोधक हितों ने इस साझेदारी को मजबूती दी। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, और नियम-आधारित व्यवस्था को बढ़ावा देने हेतु क्वाड (फनंक) जैसे मंचों पर सहयोग एक महत्त्वपूर्ण आयाम बन गया है। इसके साथ ही, चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं-भारत के रूस के साथ सैन्य संबंध, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता हेतु अमेरिका का असमर्थन, परमाणु निरस्त्रीकरण पर भिन्न दृष्टिकोण, और कुछ व्यापार एवं ऊर्जा सुरक्षा विवाद। फिर भी, बढ़ते आर्थिक जुड़ाव, तकनीकी हस्तांतरण, रक्षा समझौते और वैश्विक मंचों पर सामंजस्य ने इन मतभेदों को काफी हद तक संतुलित किया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि भारत-अमेरिका की व्यापक वैश्विक सामरिक साझेदारी साझा मूल्यों और रणनीतिक हितों पर आधारित है, जो क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक शासन में संतुलन स्थापित करने में सहायक है। भविष्य में इस साझेदारी की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि दोनों देश अपने-अपने राष्ट्रीय हितों और रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए सहयोग को किस प्रकार आगे बढ़ाते हैं।

मुख्य शब्द – द्विपक्षीय संबंध, सामरिक साझेदारी, दक्षिण एशिया, रणनीतियाँ, क्वाड, भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता

Cite This Article: डॉ. सी. अनुपा तिर्की. (2018). हिंद-प्रशांत परिप्रेक्ष्य में भारतदृअमेरिका संबंध रू सहयोग, प्रतिस्पर्धा और शक्ति-संतुलन. *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(3), 321-327. https://dx.doi.org/10.29121/granthaalayah.v6.i3.2017.6351

प्रस्तावनाः– भारत-अमेरिका नागरिक परमाणु समझौता, जिसे अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश और भारतीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में हस्ताक्षरित किया गया, दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों में एक ऐतिहासिक मोड़ साबित हुआ। इसी काल में लिए गए निर्णय आज भी दोनों देशों के संबंधों की रूपरेखा को दिशा प्रदान कर रहे हैं। इस समझौते के बाद सहयोग का दायरा नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रमों, उच्च प्रौद्योगिकी, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा और मिसाइल-रोधी तंत्र जैसे क्षेत्रों तक विस्तृत हो गया। यह साझेदारी दोनों देशों के संबंधों के इतिहास में सबसे व्यापक और गहन जुड़ाव का प्रतीक बनी। उल्लेखनीय है कि द्विपक्षीय समझौतों ने लोकतंत्र को प्रोत्साहित करने और क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के साझा प्रयासों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया।

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i3.2017.6351

यह रणनीतिक साझेदारी भारत के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। इससे भारत परमाणु क्षेत्र में “परमाणु अपवर्जित” (nuclear outcast) देश की छवि से बाहर निकल सका और स्वयं को एक उभरती वैश्विक शक्ति तथा जिम्मेदार अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर सका। राष्ट्रपति बराक ओबामा के कार्यकाल में यह साझेदारी और सुदृढ़ हुई। राजनीतिक और आर्थिक हितों के साथ-साथ साझा लोकतांत्रिक मूल्य इस संबंध के वैचारिक स्तंभ बने।
भारत ने परमाणु शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को स्वीकार कराते हुए अमेरिका के साथ सहयोग को बढ़ाया और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अपने लिए व्यापक अवसर सुनिश्चित किए। परिणामस्वरूप, वॉशिंगटन और नई दिल्ली आज पहले से कहीं अधिक समान दृष्टिकोण और लक्ष्यों को साझा करते हैं। चीन का उदय, भारत की आर्थिक क्षमता और आतंकवाद का साझा अनुभव, इन दोनों देशों को और अधिक निकट लाने में सहायक सिद्ध हुए।
राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में भारत-अमेरिका संबंधों ने और भी ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं और व्यापक वैश्विक सामरिक साझेदारी में परिवर्तित हो गए। कोविड-19 महामारी के दौरान दोनों देशों ने वैक्सीन विकास और हिंद-प्रशांत सुरक्षा के क्षेत्र में व्यापक सहयोग किया। 2024 तक इस सहयोग ने साझेदारी को और मजबूत बनाया। रक्षा, क्षेत्रीय सहयोग और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझा लक्ष्यों ने इसे नई दिशा दी।
फिर भी, चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अमेरिका हमेशा भारत के हितों का समर्थन नहीं करता, जैसे कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता का मुद्दा। इसके अतिरिक्त, भारत की इस्लामी जगत से ऐतिहासिक और सांस्कृतिक निकटता कभी-कभी अमेरिका की नीतियों से मतभेद उत्पन्न करती है। ऊर्जा सुरक्षा और परमाणु अप्रसार जैसे मुद्दों पर भी मतभेद बने हुए हैं। इन असहमतियों के बावजूद, बढ़ते आर्थिक सहयोग और पारस्परिक निर्भरता ने संबंधों की मजबूती सुनिश्चित की है।

भारत-अमेरिका संबंधों का सुदृढ़ीकरण और उसके प्रमुख कारक

भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था ने उसके आत्मविश्वास और 21वीं सदी में अग्रणी शक्ति बनने की आकांक्षाओं को और मजबूत किया है। अमेरिका ने भी भारत की बढ़ती सैन्य शक्ति और आत्मविश्वास को देखते हुए उसे अपनी विदेश नीति में एक संभावित सहयोगी के रूप में मान्यता दी। दोनों देश हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने तथा हिंद महासागर में समुद्री मार्गों की स्वतंत्रता और सुरक्षा सुनिश्चित करने में समान रूप से रुचि रखते हैं। इसी कारण दोनों देशों ने एशिया-प्रशांत और हिंद महासागर क्षेत्र के लिए संयुक्त सामरिक दृष्टि (Joint Strategic Vision) पर हस्ताक्षर किए। इससे क्षेत्रीय सुरक्षा की समझ को गहरा किया गया और अतिरिक्त सैन्य सहयोग के अवसर खुले।
भारत जहाँ अपने आधुनिक हथियारों की आपूर्ति के स्रोतों को विविध बनाना चाहता है, वहीं अमेरिका अपने हथियारों के बाजार का विस्तार करना चाहता है। इसी दिशा में दोनों देशों ने सामरिक और रक्षा मुद्दों पर बातचीत शुरू की, जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी, सैन्य कर्मियों का आदान-प्रदान और संयुक्त सैन्य तथा नौसैनिक अभ्यास शामिल हैं। उदाहरणस्वरूप, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों ने 3 अरब डॉलर के रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए।
इसके अतिरिक्त कई अन्य सकारात्मक रुझान भी देखने को मिले। परमाणु नीति और उससे जुड़ी जिम्मेदारियों पर अधिक स्पष्टता बनी, परमाणु ऊर्जा सहयोग, खाद्य सुरक्षा और व्यापार सुविधा जैसे क्षेत्रों में भी प्रगति हुई। जलवायु परिवर्तन पर मतभेद कम करने के प्रयास किए गए। अमेरिका भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश और एशिया में एक संभावित महाशक्ति सहयोगी मानता है। इस संदर्भ में दोनों देशों के उदार लोकतांत्रिक मूल्य सहयोग की वैचारिक नींव बने।
भारत को अमेरिका ने पाकिस्तान के विपरीत एक “राजनीतिक सहयोगी” के रूप में पहचाना, जबकि पाकिस्तान को “सैन्य सहयोगी” माना गया। इससे दोनों देशों के बीच राजनीतिक विश्वास और आर्थिक हितों में सामंजस्य बढ़ा। 2010 में भारत यात्रा के दौरान राष्ट्रपति ओबामा ने कहा था कि वे “दृढ़ता से मानते हैं कि भारत-अमेरिका संबंध 21वीं सदी की परिभाषित साझेदारियों में से एक होंगे।” इसी घोषणा के साथ लंबे समय से चले आ रहे तनावपूर्ण दौर का अंत हुआ और वॉशिंगटन व नई दिल्ली की सामरिक स्थिति और अधिक निकट आ गई।
2021 में अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने भारत की यात्रा के दौरान कहा कि भारत-अमेरिका संबंध “सबसे महत्वपूर्ण संबंधों में से एक” हैं, क्योंकि दोनों देशों के बीच “साझा मूल्य” हैं। चीन के बढ़ते प्रभाव को लेकर साझा चिंता ने विशेषकर एशिया और मध्य-पूर्व में दोनों देशों को और नजदीक लाया।
हालांकि, कुछ चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। भारत और अमेरिका के बीच सैन्य सहयोग में रूस की भूमिका एक बड़ी बाधा है। भारत लंबे समय से रूस पर हथियार आपूर्ति और रक्षा तकनीकी सहयोग के लिए निर्भर रहा है, जिसने भारत को सामरिक स्वायत्तता दी है। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को लेकर दृष्टिकोण में भी भिन्नता है। भारत,

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i3.2017.6351

जो ब्रिक्स (BRICS) का सदस्य है, अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में सुधार की वकालत करता है, जबकि अमेरिका मौजूदा ढाँचे को बनाए रखना चाहता है।
भारत बहुपक्षवाद (Multilateralism) का समर्थन करता है, जबकि अमेरिका अक्सर एकतरफा या नाटो समर्थित सैन्य कार्रवाइयों को प्राथमिकता देता है। भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए अमेरिकी समर्थन न मिलने से निराश हुआ। इसी प्रकार, कश्मीर विवाद और पाकिस्तान के साथ संबंधों के मुद्दे पर भी उसे अपेक्षित समर्थन नहीं मिला। साथ ही, परमाणु निरस्त्रीकरण, व्यापार वार्ताएँ (जैसे दोहा दौर), जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा और कृषि जैसे मुद्दों पर भी मतभेद बने हुए हैं।
भारत की स्वतंत्र विदेश नीति भी कभी-कभी मतभेद का कारण बनती है। उदाहरण के लिए, भारत ईरान-पाकिस्तान-भारत गैस पाइपलाइन परियोजना को ऊर्जा सुरक्षा के लिए आवश्यक मानता है और ईरान के साथ सकारात्मक संबंध बनाए रखता है। इसके अलावा, म्यांमार जैसे पड़ोसी देशों में अधिनायकवादी सरकारों के प्रति भारत की नीतियाँ भी वॉशिंगटन को असहज करती हैं। इन सब कारणों से दोनों देशों का सैन्य और राजनीतिक गठबंधन अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ पाया है।

क्वाड (Quad) में भारत की भूमिका

क्वाड (Quad) आज वैश्विक स्तर पर चर्चा का एक महत्त्वपूर्ण विषय है, विशेषकर हिंद-प्रशांत भू-राजनीति के संदर्भ में। क्वाड की उत्पत्ति 2004 में हिंद महासागर में आए भूकंप और सूनामी के बाद हुई, जब अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान ने मिलकर “सूनामी कोर ग्रुप” का गठन किया। इस प्रभावी राजनयिक समन्वय ने इन चार देशों को क्षेत्रीय मुद्दों पर सामूहिक सहयोग की संभावना का एहसास कराया।
क्वाड मूल रूप से एक परामर्श समूह (Consultative Group) है, न कि सैन्य गठबंधन। इसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित करना है जो इसके सदस्यों के हित में हो, विशेषकर चीन के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए। अक्सर इसे “क्वाड्रिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग” (Quadrilateral Security Dialogue) कहा जाता है, लेकिन 2017 में इसके पुनरुत्थान के बाद से आधिकारिक दस्तावेजों में यह शब्द प्रयोग नहीं हुआ है।
2007 में क्वाड की स्थापना और 2017 में इसके पुनर्जीवन के बाद से भारत की भूमिका को लेकर चर्चाएँ लगातार जारी हैं। यह विषय इसलिए भी विशेष है क्योंकि क्वाड के चार सदस्यों में से भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जो शेष तीन के साथ औपचारिक सैन्य गठबंधन का हिस्सा नहीं है। इस स्थिति में भारत को अन्य भागीदारों के साथ समन्वय साधना पड़ता है, जिनके दीर्घकालिक लक्ष्य भिन्न-भिन्न हैं। यह भारत की विदेश नीति की सूक्ष्मताओं को भी स्पष्ट करता है।
यद्यपि भारत क्वाड से अधिक निकटता बढ़ा रहा है, फिर भी पारंपरिक सुरक्षा मामलों में वह एक सतर्क खिलाड़ी बना हुआ है। चीन के बढ़ते प्रभाव के बावजूद, भारत क्वाड को प्रत्यक्ष रूप से “विरोधी-चीन गठबंधन” के रूप में परिभाषित करने से बचता है। इसके विपरीत, भारत लगातार इस बात पर जोर देता है कि क्वाड किसी विशेष देश के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह साझा मूल्यों और उद्देश्यों को बढ़ावा देने वाला मंच है।
इस प्रकार, क्वाड में भारत की भागीदारी उसके रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy) के सिद्धांत के अनुरूप है। भारत यह सुनिश्चित करना चाहता है कि वह एक ओर लोकतांत्रिक मूल्यों और हिंद-प्रशांत में संतुलन का समर्थक बने, वहीं दूसरी ओर अपने कूटनीतिक विकल्पों को सीमित न करे।

क्षेत्रीय सुरक्षा की गतिशीलता का विश्लेषण

एशिया-प्रशांत का हिंद-प्रशांत क्षेत्र निकट भविष्य में विश्व के सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक बनने की संभावना रखता है। यहाँ पुरानी प्रतिद्वंद्विताएँ पुनर्जीवित हो रही हैं, जिससे सुरक्षा परिदृश्य जटिल होता जा रहा है, साथ ही तीव्र आर्थिक विस्तार भी हो रहा है। विश्व व्यापार का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से होकर गुजरता है, जिससे यह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का केंद्रीय केंद्र बन गया है। अमेरिका, चीन, जापान, भारत और दक्षिण कोरिया - ये पाँच देश विश्व की शीर्ष दस अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हैं। यह क्षेत्र तकनीकी उद्योगों, इलेक्ट्रॉनिक घटकों और प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध है।
दक्षिण एशिया में लंबे समय से सुरक्षा दुविधा (Security Dilemma) विद्यमान रही है। भारत और अमेरिका के बीच सामरिक गठबंधन ने भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता को और गहरा किया है तथा क्षेत्रीय स्थिरता को चुनौती दी है। भारत की क्षेत्रीय वर्चस्व की आकांक्षाएँ और उसकी तकनीकी प्रगति ने पाकिस्तान के साथ सुरक्षा वातावरण को और तनावपूर्ण बना दिया है। पाकिस्तान हर संभव प्रयास कर रहा है कि वह दक्षिण एशिया में संतुलनकारी शक्ति (Counterbalance) के रूप में बना रहे।

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i3.2017.6351

तेजी से बदलते जलवायु और नई तकनीकों का उदय भी इस क्षेत्र की रणनीतिक स्थिरता को प्रभावित कर रहा है। भारत और पाकिस्तान दोनों ने परमाणु क्षमताओं का विकास अलग-अलग कारणों से किया है, जिससे दक्षिण एशिया का सुरक्षा परिदृश्य अन्य क्षेत्रों से अलग हो गया है। पाकिस्तान ने सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए परमाणु हथियारों का उपयोग क्षेत्रीय खतरों के जवाब में किया, जबकि भारत ने अपने क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति-स्थिति की आकांक्षा के तहत सामरिक क्षमताओं का विस्तार किया।

भारत और पाकिस्तान के बीच पिछले 70 वर्षों में तीन युद्ध हो चुके हैं, जिनमें कारगिल संघर्ष और कई सीमा झड़पें शामिल हैं। इस ऐतिहासिक तनाव ने दोनों देशों की परमाणु नीतियों को और अधिक संवेदनशील बना दिया है। स्टॉकहोम पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) के अनुसार, पिछले दस वर्षों में भारत ने अपनी सैन्य क्षमताओं को मजबूत करने में लगभग 100 अरब डॉलर खर्च किए हैं। 2017-18 के बजट में भारत ने अपना रक्षा व्यय बढ़ाकर 53.5 अरब डॉलर कर दिया। यह स्थिति इस आशंका को जन्म देती है कि यदि भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष हुआ, तो पाकिस्तान परमाणु हथियारों का सहारा ले सकता है।

भारत द्वारा रूस से S-400 मिसाइल प्रणाली की खरीद ने पाकिस्तान की वायु सेना को सामरिक दृष्टि से कमजोर कर दिया है। इसके साथ ही एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा भी भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता और दक्षिण एशिया की सामरिक स्थिरता को प्रभावित कर रही है। अमेरिका, भारत को उन्नत सैन्य तकनीक उपलब्ध कराकर चीन को सीमित करना चाहता है, जबकि चीन अपनी “बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव” जैसी महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं के माध्यम से पाकिस्तान के साथ आर्थिक-सामरिक साझेदारी को मजबूत कर रहा है।

इस प्रकार, अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता दक्षिण एशिया के लिए अवसरों और चुनौतियों दोनों को लेकर आती है। यदि एशिया-प्रशांत क्षेत्र में इन महाशक्तियों के बीच तनाव बढ़ता है, तो यह सीधे भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता और अप्रत्यक्ष रूप से भारत-पाकिस्तान संबंधों पर गहरा प्रभाव डालेगा।

भारत-अमेरिका संबंधों की संभावनाएँ

वर्तमान समय में भारत और अमेरिका दोनों कठिन मुद्दों पर खुलकर चर्चा कर रहे हैं और व्यावहारिक समाधान खोजने के लिए प्रयासरत हैं। इसके बावजूद, भारत अपनी विदेश नीति के बुनियादी सिद्धांतों के अनुरूप अपने राष्ट्रीय हितों की दृढ़ता से रक्षा करता है और साथ ही अमेरिका के दृष्टिकोण को समझने और सहनशीलता दिखाने का प्रयास करता है।

भारत उन नीतियों का विरोध करता है जिनमें अमेरिका देशों को “लोकतांत्रिक” या “दुष्ट राज्य” के रूप में वर्गीकृत कर उन्हें अलग-थलग करता है या प्रतिबंध लगाता है। यही कारण है कि भारत ने रूस, ईरान और सीरिया के प्रति अमेरिकी नीतियों का विरोध किया है, विशेषकर तब जब वे भारतीय हितों से टकराती हैं या दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में क्षेत्रीय शांति को खतरा पहुँचाती हैं। विद्वान दुबे के अनुसार, अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश के साथ द्विपक्षीय संबंध बनाए रखना कठिन है क्योंकि वह या तो पूर्ण समर्थन या पूर्ण विरोध की अपेक्षा करता है और समझौते की बहुत कम गुंजाइश छोड़ता है।

भारत के लिए स्वतंत्र विदेश नीति बनाए रखना हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है, क्योंकि देश के भीतर भी कुछ शक्तिशाली गुट ऐसे हैं जो अमेरिका-नेतृत्व वाले महाशक्ति गठबंधन के साथ घनिष्ठ संबंधों का समर्थन करते हैं। फिर भी, 21वीं सदी के दूसरे दशक में भारत-अमेरिका संबंधों में सकारात्मक विकास हुआ, जिसे भारत की परमाणु क्षमता, सैन्य शक्ति और आर्थिक वृद्धि ने और अधिक बल दिया। साझा आर्थिक परस्परता और चीन के प्रभाव को संतुलित करने में भारत की भूमिका भी इन संबंधों के भविष्य के लिए महत्त्वपूर्ण तत्व है।

भारत की रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने की प्रतिबद्धता के कारण, अमेरिका के साथ उसकी साझेदारी आर्थिक सहयोग पर अधिक केंद्रित है, जबकि राजनीतिक गठजोड़ और आर्थिक सहयोग के बीच स्पष्ट अंतर बना हुआ है। इसी भावना के अंतर्गत राष्ट्रपति बराक ओबामा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त रूप से अपने संबंधों को “स्वाभाविक और विशिष्ट साझेदारी” (Natural and Unique Partnership) की संज्ञा दी।

भारत की विदेश नीति विविध और लचीली है, जो विश्व स्तर पर होने वाले परिवर्तनों को ध्यान में रखती है। भारत केवल अमेरिका से जुड़ाव पर निर्भर नहीं है, बल्कि वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में अनेक मोर्चों पर अपने हितों को आगे बढ़ा रहा है। राष्ट्रपति जो बाइडेन की अपेक्षाकृत उदार विदेश नीति ने भारत को चीन के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए और मजबूत सहयोग की आशा दी है। भारत क्वाड (Quad) को भी इसी दिशा में एक महत्त्वपूर्ण मंच मानता है।

अमेरिका-ईरान संबंधों में संभावित सुधार भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा का अवसर हो सकता है, क्योंकि इससे सस्ता ईरानी तेल प्राप्त करना संभव होगा। दूसरी ओर, बाइडेन प्रशासन की नीतियाँ -जैसे सामाजिक हिंसा, जाति व्यवस्था, नागरिकता

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i3.2017.6351

संशोधन अधिनियम और जम्म-कश्मीर की स्थिति-भारत द्वारा बारीकी से देखी जा रही हैं। फिर भी, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि राष्ट्रपति बाइडेन भारत के साथ गहरे संबंधों के समर्थक रहे हैं, भारत-अमेरिका संबंधों में सुधार की उम्मीद की जा रही है। 2021 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जी-7 सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया जाना इस बात का संकेत है कि भारत अमेरिका के लिए एक रणनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण साझेदार है।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र दोनों देशों की विदेश नीति की प्राथमिकताओं में शीर्ष पर है। चीन के बढ़ते प्रभाव और आक्रामक रुख को देखते हुए अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया और जापान के बीच क्वाड सहयोग अनिवार्य हो गया है। यह भारत को चीन का प्रत्यक्ष सामना किए बिना हिंद-प्रशांत में संतुलन स्थापित करने में सहायता करता है। 2021 में क्वाड की आभासी और प्रत्यक्ष बैठकों ने एक नियम-आधारित और शांतिपूर्ण हिंद-प्रशांत क्षेत्र की प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ किया। “मालाबार नौसैनिक अभ्यास” और “युद्ध अभ्यास 2021” जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यासों ने इस सहयोग को और गहरा किया।

फिर भी, दोनों देशों की हिंद-प्रशांत दृष्टि में कुछ भिन्नताएँ हैं। अमेरिका वैश्विक नेतृत्व बढ़ाने के लिए अपने सैन्य और राजनीतिक प्रभाव को विस्तार देना चाहता है, जबकि भारत अपने भू-राजनीतिक प्रभाव और समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है। भारत यह मानता है कि चीन की आक्रामकता का मुकाबला करने के लिए अमेरिका के साथ घनिष्ठ सहयोग आवश्यक है, लेकिन अत्यधिक सामरिक निर्भरता उसकी अंतरराष्ट्रीय संप्रभुता को सीमित कर सकती है।

अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन के बीच हुए AUKUS समझौते, जिसमें अमेरिका ने ऑस्ट्रेलिया को परमाणु पनडुब्बी तकनीक दी, ने क्वाड सदस्यों के बीच असमानता को उजागर किया है और इससे भारत-अमेरिका संबंधों पर प्रभाव पड़ सकता है। इसी कारण भारत ने रूस से S-400 मिसाइल प्रणाली की खरीद जारी रखी, जिसे अमेरिका के CAATSA कानून के तहत प्रतिबंधों का खतरा हो सकता है। भारत इसे अपनी “रणनीतिक स्वतंत्रता” और “संप्रभुता” के लिए आवश्यक मानता है।

अंततः, भारत यह स्पष्ट करता है कि वह अमेरिका के साथ सहयोग के लिए तैयार है, लेकिन बराबरी, पारस्परिक सम्मान और अपनी स्वतंत्र विदेश नीति के सिद्धांतों से समझौता नहीं करेगा। औपचारिक गठबंधनों से भारत अभी भी सतर्क है और व्यावहारिक परिणामों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा है। अतः निकट भविष्य में भारत-अमेरिका संबंध एक रणनीतिक साझेदारी के रूप में बने रहेंगे, जो दोनों देशों के साझा हितों की पूर्ति करेंगे।

निष्कर्ष

भारत-अमेरिका संबंधों का व्यापक वैश्विक सामरिक साझेदारी (Comprehensive Global Strategic Partnership) में विकसित होना अंतरराष्ट्रीय राजनीति के परिदृश्य में एक बड़ा परिवर्तन है। यह केवल दो देशों का सहयोग नहीं, बल्कि साझा मूल्यों, लोकतांत्रिक आदर्शों और परस्पर रणनीतिक हितों का प्रतिबिंब है। इस साझेदारी की ऐतिहासिक जड़ें स्वतंत्रता-उपरांत संपर्कों में निहित हैं, जबकि इसकी वास्तविक मजबूती शीत युद्ध के बाद के बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य और समकालीन वैश्विक चुनौतियों से उपजी है।

रक्षा, तकनीक, जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय स्थिरता के क्षेत्र में सहयोग इस साझेदारी का प्रमुख आधार बना। विशेष रूप से चीन के उदय और हिंद-प्रशांत में शक्ति संतुलन की बदलती स्थितियों ने दोनों देशों को और निकट लाया। दोनों राष्ट्र नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और स्थिरता के पक्षधर हैं, किंतु इनकी राह में कुछ अवरोध भी हैं- जैसे भारत-रूस सैन्य सहयोग, संयुक्त राष्ट्र सुधार पर अमेरिकी संकोच, तथा वैश्विक शासन और परमाणु निरस्त्रीकरण पर दृष्टिकोणों का अंतर।

इस साझेदारी की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि दोनों देश अपने-अपने राष्ट्रीय हितों और रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए किस प्रकार सहयोग को गहराई प्रदान करते हैं। यदि यह संतुलन साधा जा सके, तो भारत और अमेरिका न केवल द्विपक्षीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक मंच पर भी उभरती चुनौतियों- जैसे जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद और क्षेत्रीय अस्थिरता का प्रभावी समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत-अमेरिका संबंध 21वीं सदी की सबसे निर्णायक और परिभाषित साझेदारियों में से एक बन सकते हैं। यह सहयोग क्षेत्रीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर स्थिरता और प्रगति सुनिश्चित करने की क्षमता रखता है, बशर्ते दोनों राष्ट्र साझा लक्ष्यों के साथ-साथ एक-दूसरे की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का भी सम्मान करें।

संदर्भ सूची

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i3.2017.6351

1. साइबर लेनिंका। *Strategic partnership between India and the United States: Examining driving and restraining forces* [इंटरनेट]. [उद्धृत: 7 मार्च 2024]। उपलब्ध: https://cyberleninka.ru/article/n/strategic-partnership-between-india-and-the-unitedstates-examining-driving-and-restrainingforces
2. ड्यूपॉन्ट, पी. *The United States Indo-Pacific strategy and a revisionist China: Partnering with small and middle powers in the Pacific Islands region. Issues Insights*. 2021; 21(2): 1-40.
3. ग्रिएको, के. ए. *The National Defense Strategy: Continuity and competition. Strategic Studies Quarterly*. 2018; 12(2): 3-8.
4. गुप्ता, के. आर., एवं शुक्ला, वी. *Foreign policy of India*. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (पी) लिमिटेड, 2009, पृ. 576.
5. हेयदारियन, आर. जे. *The Indo-Pacific: Trump, China, and the new struggle for global mastery*. सिंगापुर: पेलग्रेव मैकमिलन, स्प्रिंगर नेचर सिंगापुर, 2020, पृ. 371.
6. जयशंकर, एस. *The India Way: Strategies for an uncertain world*. नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स इंडिया, 2020, पृ. 207.
7. कापलान, आर. *Monsoon: The Indian Ocean and the future of American power*. न्यूयॉर्क: रैंडम हाउस ट्रेड पेपरबैक्स, 2010, पृ. 323.
8. कुमार, एस., वर्मा, एस. एस., एवं शाह, एस. एच. *Indo-US convergence of agenda in the new Indo-Pacific regional security architecture. South Asia Research*. 2020; 40(2): 215-230. DOI: 10.1177/0262728020915564
9. यूनिवर्सिटी ऑफ स्वाबी। *Pakistan Journal of Social Sciences (PJSS)*. 2020; 38(2). [इंटरनेट]. [उद्धृत: 7 मार्च 2024]। उपलब्ध: https://www.uoswabi.edu.pk/data/downloads/1956.pdf
10. यांग, जे. *The Quad's rise, fall, and rebirth: Tracing the evolution of quadrilateral cooperation in the Indo-Pacific. International Journal of Naval History*. 2022; 4(1): 45-64.
11. कार्नेगी इंडिया। *Modi-Biden dynamic for next steps in India-U.S. relations* [इंटरनेट], 16 जून 2023 [उद्धृत: 7 मार्च 2024]। उपलब्ध: https://carnegieindia.org/2023/06/16/modibiden-dynamic-for-next-steps-in-india-u.s.-relations-pub-89972
12. हेडुक, एफ. *Navigating the Indo-Pacific: Strategies and challenges for regional security and cooperation. Asia Policy*. 2020; 15(2): 125-149.
13. रिम, सी. *The impact of COVID-19 on global supply chains*.
14. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। *Joint statement - Vision and principles for India-US comprehensive global strategic partnership* [इंटरनेट]. [उद्धृत: 7 मार्च 2024]। उपलब्ध: https://www.mea.gov.in/bilateraldocuments.htm?dtl/32421/joint_statement_vision_and_principles_for_IndiaUS_comprehensive_global_strategic_partnership
15. अली, ज़ेड. *The nuclear factor in India-Pakistan strategic stability: Challenges and prospects. Strategic Studies*. 2022; 45-60.

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i3.2017.6351

16. काकर, एस. *India's pursuit of great power status: Implications for South Asia*. *South Asian Journal of Strategic Affairs*. 2022; 7(1): 78-92.
17. कार्नेगी इंडिया। *Modi-Biden dynamic for next steps in India-U.S. relations* [इंटरनेट], 16 जून 2023 [उद्धृत: 7 मार्च 2024]। उपलब्ध: https://carnegieindia.org/2023/06/16/modibiden-dynamic-for-next-steps-in-india-u.s.-relations-pub-89972
18. खतक, एन. *India's military modernization and its implications for South Asia: A critical analysis*. *Journal of South Asian Studies*. 2019; 12(2): 87-104.
19. यूनुस, ए. *US-China rivalry and its implications for South Asia*. *International Relations Quarterly*. 2020; 35(3): 221-238.
20. ह्राबकोवा, वी. *The impact of US-China rivalry on Pakistan-India relations: Opportunities and challenges*. *Asian Affairs*. 2019; 42(4): 315-330.
21. *द डिप्लोमैट*. *India-U.S. relations* [इंटरनेट]. [उद्धृत: 7 मार्च 2024]। उपलब्ध: https://thediplomat.com/tag/india-u-srelations/

ब्रुकिंग्स इंस्टिट्यूशन। *India and the United States: A strategic partnership* [इंटरनेट]. [उद्धृत: 7 मार्च 2024]। उपलब्ध: https://www.brookings.edu/events/india-and-the-united-states-a-strategic-partnership/

*Corresponding author.
E-mail address: